आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 22-09-14

आत्मा का, परमात्मा का और सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देकर हमें मास्टर ज्ञान सागर बनाने वाले, ज्ञान सूर्य बाप ने कहा, मीठे बच्चे - बेहद की स्कॉलरशिप लेनी है तो अभ्यास करो - एक बाप के सिवाय और कोई भी याद न आये.

बाबा हमें हर मुरली में यह कहते है मीठे बच्चे, खुद को आत्मा समझ मुझ एक बाप को याद करो. हम ब्राह्मण बच्चे चाहते भी है की बाबा की याद ही सदा रहे, दूसरा कुछ भी बुद्धि को भ्रष्ट न करें लेकिन माया भी कोई न कोई युक्ति करके बाप की याद को हटा देती है. हम माया से हार खा लेते है इसका कारण हमने इस ज्ञान का पहला लेशन, स्वयं को आत्मा समझकर चलो - पक्का नहीं किया हैं. हमने लास्ट ६३ जन्म देह-अभिमानी होकर रहे है इसलिए भी अभी देही-अभिमानी बनना, उतना ईजी नहीं हैं. इसलिए बाबा हर साकार मुरली में हमें प्रैक्टिस कराने के लिए सबसे पहले कहते है - बच्चे, खुद को आत्मा समझकर यहॉ बैठो.

बाबा की हर साकार मुरली हमें तीन बातों की प्रैक्टिस करवाती है. १. आत्म-अभिमानी बनने की २. आत्मा समझकर परमात्मा को याद करने की ३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करने की या कहे स्वदर्शन चक्र फिराने की.

आज की मुरली में बाबा ने कहे महावाक्यों को ऊपर बताये तीन भागो में डिवाईड कर, तीनों का अभ्यास स्वयं पर करेंगे तो हम ईश्वरीय स्कॉलरशिप के लायक बन जायेंगे.

१. आत्म-अभिमानी बनने की प्रैक्टिस के लिए --

बाबा ने कहा,

- ॐ शांति का अर्थ तो बच्चों को अच्छी रीति मालूम है - मैं आत्मा, यह मेरा शरीर. यह अच्छी रीति याद करो.
- आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है.
- आत्मा कभी घटती-बढ़ती नहीं.
- वह है इतनी छोटी आत्मा, इतनी छोटी आत्मा ही ८४ जन्म लेकर सारा पार्ट बजाती है.
- आत्मा ही शरीर को चलाती है.
- ऊंचे ते ऊंच बाप पढ़ाते हैं तो जरूर मर्तबा भी ऊंच मिलेगा. आत्मा ही पढ़कर मर्तबा पाती है.
- आत्मा कोई देखी नहीं जाती. कोई बहुत कोशिश करके देखें तो भी समझ नहीं सकेंगे.
- तुम समझते हो आत्मा ही शरीर में निवास करती है.

- आत्मा अलग है, जीव अलग है. आत्मा छोटी-बड़ी नहीं होती है. जीव छोटे से बड़ा होता है.
- आत्मा ही पतित और पावन बनती है. आत्मा ही बाप को बुलाती है - हे पतित आत्माओं को पावन बनाने वाले बाबा आओ.
- अपने को आत्मा समझो. यह शरीर तो मिट्टी हो जाता है.
- आत्मा अविनाशी है, शरीर तो घड़ी-घड़ी जलता रहता है. आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेती है.

२. आत्मिक स्थिति में रहकर परमात्मा को याद करो --

- भगवान माना आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं. यह तो पढ़ाने वाला है निराकार बाप. आत्मा सुनती है और परमात्मा सुनाते हैं. यह नई बात है ना.
- हम सभी आत्मायें हैं ब्राइडस (सीतायें) और वह है राम, ब्राइडग्रूम एक.
- बाबा, आप ही पतित-पावन सर्वशक्तिमान अथॉरिटी है.
- बाबा, आप हमें ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाते हैं.
- बाबा, आप हमें ब्रह्मा के मुख द्वारा राजयोग सिखाते हो.
- बाबा, हम आपको लास्ट ६३ जन्मो से ढूँढते थे, आपको पाने के लिए कितने धक्के खाते थे. अभी आप हमें भक्ति का फल देने आये हो. आप ने हमें शिवरात्रि का सही अर्थ भी समझाया है.
- बाबा, आप ही ज्ञान सूर्य, ज्ञान सागर है. आपके आने से हमारा भक्ति मार्ग का अज्ञान मिट जाता है.
- बाबा, आप की याद से ही हम आत्माये वापस गोरा बन जायेंगी.

३. सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को याद करो. -

- पुरानी दुनिया में है अनेक धर्म, नई दुनिया में है एक धर्म. एक से अनेक धर्म हुए हैं फिर एक जरूर होना है.
- पहले-पहले सतयुग में हम कितने सुन्दर है. आत्मा पवित्र सुन्दर है तो शरीर भी पवित्र सुन्दर लेती है.
- वहॉ कितना धन दौलत सब कुछ नया होता है. नई धरनी फिर पुरानी होती है.
- बाप समझाते हैं तुम्हारी आत्मा जब सतयुग में है तो कितनी ऊंच है फिर पुनर्जन्म लेते-लेते सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाती है. अब बाबा फिरसे स्वर्ग की स्थापना कर रहे है. वहॉ दूसरा कोई धर्म नहीं होता.
- इस समय हम पढ़ रहे है फिर सूर्यवंशी में चले जायेंगे. यह है हम ब्राह्मणों का कुल. बाबा हमें ब्राह्मण कुल में एड्प्ट कर पढ़ाते है.

इस तरह से मुरली में से तीनों बातों पर पॉइन्टस निकाल कर, उसकी प्रैक्टिस करने से हमें बेहद की ईश्वरीय स्कॉलरशिप जरूर प्राप्त होगी.

ॐ शांति.